गोपालराम गहमरी का कथा-साहित्य ; एक अनुशीलन”

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग में पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

निर्देशक

डॉ० चन्द्रिका ठाकुर

ॲसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

प्रियंका कुमारी साव

(जे.आर.एफ)

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची

भूमिका

भारत में कथा की परंपरा सदियों पुरानी है। कथा–कहानियों के जिस स्वरूप को आज हम देख रहे हैं, पढ़ रहें हैं, सुन रहे हैं, यहाँ तक आने में इसे विविध परिस्थितियों एवं स्वरूपों से होकर गुजरना पड़ा है। विश्व में उपलब्ध जितनी भी भाषाएँ, बोलियाँ आदि हैं, सब में कथा की परंपरा रही है।

हिन्दी में विशेष रूप से खड़ी बोली में कथा लिखने की परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारंभ होती है किन्तु यह परंपरा उक्त समय में अविराम रूप से नहीं चली। बीसवीं शताब्दी के उपरांत ही यह परंपरा अखंडित रूप से चली। इसे परिष्कृत और परिनिष्ठित बनाने में कई साहित्यकारों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है।

आधुनिक कथा साहित्य के इतिहास को स्पष्ट रूप से समझने के लिए विद्वानों ने इसे मुख्यतः तीन खंडों में विभक्त किया क्रमशः प्रेमचंद–पूर्व युग, प्रेमचंद युग एवं प्रेमचंदोत्तर युग हैं। इसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य युग के प्रवृतियों एवं परिस्थितियों के अनुरूप उनके नामकरण किए गए हैं। इन्हीं खंडों में से एक खंड प्रेमचंद–पूर्व युग खंड है, जिसके अंतर्गत सन् 1877 ई० से 1918 ई० तक प्रकाशित कथा साहित्य के अवदानों का अध्ययन किया जाता है। इस युग में कई साहित्यकार हुए जिनमें कई अत्यधिक प्रसिद्ध हुए और कुछ

ज्ञानवान होते हुए भी प्रसिद्धि के लिए लालायित नहीं रहे केवल निष्ठा से साहित्य सेवा करते रहे। इन्हीं नामों में से एक नाम गोपालराम गहमरी का भी है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। कथाकार समाज से ही रचना की विषयवस्तु व पात्रों को चुनकर कल्पना और यथार्थ के बीच समन्वय बनाकर अपनी कृति को जीवंतता प्रदान करता है, और यह जीवंतता ही रचनाकार व उनकी कृति को कालजयी बनाती है।

रचना संसार में कुछ कृति केवल समस्याओं को केन्द्रित नहीं करती, बल्कि समस्याओं के साथ संघर्ष करते हुए मूल समाधान तक भी पाठकों को लेकर चलती है। जासूसी कथाओं का वस्तु व शिल्प विन्यास इसी प्रकिया के अन्तर्गत यथार्थ समस्याओं को लेकर उसका समाधान आदर्शवादी ढंग से किया गया है। यहाँ यथार्थ और आदर्श प्रधान प्रवृति क्रमशः जीवन के व्यावहारिक पक्ष से प्रेरित होकर भाव सत्य को लेकर आगे बढ़ती है।

गहमरी जी प्रेमचंद–पूर्व युग के प्रसिद्ध जासूसी कथाकार के रूप में सम्मानित एवं प्रसिद्ध है। तात्कालिक युग में आदर्शवादिता को प्राथमिकता देने का प्रचलन था। समाज, राजनीतिक एवं शासन व्यवस्था में अर्थात हर क्षेत्र में आदर्शवाद की स्थापना चाहते थे। इनकी कथाओं में घटित घटना जीवन के व्यावहारिक पक्ष के अत्यंत निकट

प्रतीत होती है जो भाव सत्य से प्रेरित होकर आदर्शवादी नैतिक दृष्टिकोण का परिचायक होता है। गहमरी जी अपनी कथाओं में पात्रों के जीवन का अंतिम परिणाम शुभ और सत्य दिखा कर युगीन आदर्शवादी मनोवृति के साथ समन्वय स्थापित करते हैं।

हिन्दी में जासूसीकथा साहित्य के जनक के रूप में गोपालराम गहमरी जी का अपना एक अलग स्थान रहा है। इन्होंने जासूसी कथा लेखन के माध्यम से हिंदी पढ़ने के लिए पाठकों की एक विशाल समूह को उत्साहित किया। देवकीनन्दन खत्री के बाद गहमरी जी दूसरे कथाकार रहे, जिनकी कृतियों को पढ़ने के लिए अहिंदी भाषियों ने भी हिंदी सीखी।

हिंदी में 'जासूस' शब्द के प्रचलन एवं जासूसी कथा–लेखन के प्रवर्तन का श्रेय गोपालराम गहमरी को जाता है। उन्होंने सन् 1900 ई० में 'जासूस' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया जो निरन्तर 38 वर्षों तक निकलती रही। उन्होंने जासूस पत्रिका के माध्यम से लगातार कथा लेखन के साथ तात्कालिक साहित्यिक वैचारिकी को भी अभिव्यक्ति प्रदान किया।

गहमरी जी ने मई 1939 ई० में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित लेख के रूप में संस्मरण लिखा था, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया था कि मैंने लगभग दो सौ मौलिक और अनुदित रचनाएँ लिखे है। वर्तमान

में बहुत कम पुस्तक ही विभिन्न प्रकाशन मंडल द्वारा प्रकाशित हुई। मेरी जानकारी के कुछ चर्चित उनकी रचना खूनी भेद, गेरुआ बाबा, जासूस की डाली, ठनठन गोपाल, झंडा डाकू, डबल बीबी, हत्या और कृष्णा, पत्नी, बलिहारी बुद्धि, भोजपुर की ठगी, मायावी, गोलकधंधारी एवं अन्य जासूसी कहानियाँ, हंसराज की डायरी(कहानी संग्रह) आदि जिनमें जासूसी के साथ सामाजिक उपदेश प्रधान रचनाएँ भी शामिल है।

1913 में जासूस अंक में 'गुप्तकथा' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसका पात्र चिराग अली एक मुस्लिम व्यक्ति है जो भूतकालीन जीवन में किये गये कुकर्म पर पर्दा डालने के लिए प्रयत्न करता है किन्तु जासूस के माध्यम से भेद खुल जाता है। अतः सत्य की विजय होती है।

1914 में जासूस के जून अंक में 'अटल प्रतिज्ञा' नामक बहुत छोटी कहानी प्रकाशित हुई थी इस कहानी के माध्यम से लेखक ने दैनिक जीवन के छोटे–छोटे गलतियों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है इस कहानी के अंतर्गत भोला नामक पात्र की छोटी गलती की वजह से भविष्य में उसे भयंकर मूल्य चुकाना पड़ता है। अन्त में वह अटल प्रतिज्ञा करता है कि चिट्ठी लिखकर एक बार पढ़ लेना चाहिए।

'गल्प पंचक' गहमरी जी कहानी संग्रह है इसकी सभी कहानियाँ जासूस पत्रिका में प्रकाशित हुई है। इन पाँच कहानियों में 'आदमी बनो', 'ननद भौजाई', 'आशा', संकट में शिक्षा और अंधे के हाथ बटेर आदि उपदेश प्रधान कहानियाँ हैं, जो नवजागरण से प्रभावित है। 'आदमी बनो' कहानी में मानवतावादी विचारों का महत्त्व दिया गया जिसका नायक स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय होकर गाँधीवादी विचार को महत्त्व देते हुए चरखा काटता है किन्तु उसकी अपनी माँ ताना देती है कि बी.ए. एम.ए. पास करके जुलाहे का रोजगार कर रहा है। कहानी में बहुत स्थानों पर पात्रों के आपसी संवाद के माध्यम से तत्कालीन समाज में स्त्री के प्रति संकुचित मानसिकता का चित्रण मिलता है।

गहमरी जी की कहानियों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं, जो निम्नरूप में दृष्टव्य हैं–

"त्याग दे बेटा! ऐसी को! स्त्री तो पैर की जूती होती है। हम तोरा फिर ब्याह करे देते है। देर काहे की है इसमें।"

"हिंदू और मुसलमान नाम सुनते–सुनते मैं ऊब गया हूँ। बेहतर होता यह दोनों नाम मिट जाते और सब लोग अपने को आदमी कहते।"

कहानी का नायक गोविंद सिंह धार्मिक संकीर्णता, जाति– पॉति की रूढ़ परम्परा व अंधविश्वास का विरोध तथा स्त्री गरिमा के पक्ष में आवाज उठाते हुए दिखाई देते है।

‘हंसराज की डायरी’ (कहानी संग्रह) जो डायरी विधा में लिखी हुई हैं, जिसका मुख्य पात्र ‘हंसराज’ है जो पेशे से जासूस है । ‘ग्रामोफोन– पिन’ नामक कहानी में अखबार में आये मनोरंजन प्रधान विज्ञापनों की अधिकता को अपना संवाद के माध्यम से रेखांकित करते हुए तत्कालीन समस्या को अभिव्यक्त करता है।

"लेकिन अखबारवाले होते है बड़े शैतान। पूरा अखबार विज्ञापन से तो भरते, कुछ फजूल खबरे छापकर कॉलम नष्ट करते है।"

हंसराज कहते है "इनमें उन बेचारों का कुछ दोष नहीं है, तुम्हारे ऐसे लोगों का मनोरंजन न कर सके तो उनकी ब्रिकी कहाँ होगी! इसी के साथ बाध्य होकर इन खबरों की सृष्टि दरकार होती है।"

गहमरी जी की रचनाओं में पात्रों के आपसी संवाद के अनेक उदाहरण मिलते है जिनमें युगीन समस्याओं एवं कारणों पर प्रकाश डाला गया है।

शोध विषय का उद्देश्य

शोध सोद्देश्य होता है। प्रत्येक शोध दिशा निर्दिष्ट होती है और सब का कोई–न–कोई उद्देश्य होता है। बिना उद्देश्य के शोध अर्थहीन होता है। शोध का मुख्य ध्येय ही है अज्ञात तथ्यों का प्रकटीकरण अथवा किसी की पुनर्व्याख्या करना और नई संभावनाओं को तलाशना।

प्रस्तुत शोध विषय "गोपालराम गहमरी के कथा साहित्य एक अनुशीलन" में उनकी रचनाओं का अध्ययन मनन करके उनके साहित्य की विशेषता के अंतर्गत कथा साहित्य के कलात्मक और भावात्मक पक्ष को सामने लाने का प्रयास किया जाएगा। गोपालराम गहमरी युगीन की साहित्यिक प्रवृतियों को सामने लाने का प्रयास किया जाएगा यह भी सामने लाने का प्रयास किया जायेगा कि गोपालराम गहमरी का साहित्यिक अवदान तत्कालीन पाठक वर्ग के जीवन–जगत् को कितना प्रभावित करती है? इस शोध के माध्यम से गोपालराम गहमरी के जीवन जगत् को उभारने का प्रयास किया जाएगा तथा साहित्यिक दृष्टिकोण से उन पर किस साहित्यकार का सर्वाधिक प्रभाव है या किस साहित्य से प्रभावित होकर उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में आने का निश्चय किया इसका खोज करना शोधार्थी का अभिष्ट होगा । इसके अतिरिक्त उनका हिन्दी कथा साहित्य को सुदृढ़ करने में क्या योगदान

है उसे जानने की कोशिश की जाएगी। उक्त शोध कार्य को पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण सें पूर्ण करने का अथक प्रयास किया जाएगा।

शोध की प्रासंगिकता

प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा किए गए कार्य को इस उद्देश्य से भी करते हैं कि उसका कार्य भविष्योन्मुख हो। वह भविष्य में भी महत्वपूर्ण बना रहे, ताकि उनके पीछे के लोगों को भी उनके कार्य, नाम का पता लगे। साहित्यकार तो होता ही भूत, वर्तमान के साथ–साथ भविष्य दृष्टा। गहमरी जी का साहित्य भी भूत, और तत्कालीन समय के परिप्रेक्ष्य में लिखा गया था, किन्तु वह भविष्य के सन्दर्भ में भी उतना ही सटीक साबित हो रहा है। उनके कथा–साहित्य अपने समय की स्थितियों, अंधविश्वासों, धार्मिक रूढ़ियों पर जमकर प्रहार के साथ–साथ नवजागरणकालीन वैचारिकी को भी अभिव्यक्त करती है। वे जासूसी कथाओं में अपराध और अपराधी को ग्लैमराइज नहीं किया बल्कि यथार्थ धरातल में खल चरित्र को सजा देकर असत्य पर सत्य की विजय का भी संदेश देते है। उनकी कहानी संग्रह 'काशी की गोलकधंधारी' उन दिनों के बनारसी गुण्डों करामातो, को समझ सकते है। 'जमुना के खून' में नारी–उत्पीड़न, 'जासूस की भूल' में डाकू बलराम के अत्याचार एवं पुलिस की असफलता हमें आज से जोड़ती है। कथा सम्राट प्रेमचंद जी ने जासूसी कथा लेखन को साहित्य की

श्रेणी में रखने के लिए आदर्शवाद, कष्टों को झेलना, न्याय – मर्यादा की रक्षा जैसी उदात्त भावनाओं की स्थापना पक्ष में मत रखते हैं।

शोध का महत्त्व

शोध के दौरान जब हम किसी विषय वस्तु के विविध पक्षों का अध्ययन करते हैं तो इससे हमारे वैचारिक पक्ष का स्तर में मजबूती प्रदान करते हैं, विवेचनात्मक शक्ति का विकास होता है। इस दृष्टि से भी शोध का महत्व है। शोध के माध्यम से हम अज्ञात तथ्यों को ज्ञात करने का प्रयास करते हैं, वहीं शोध के माध्यम से हम ज्ञात में से अज्ञात तथ्यों को भी प्रकट करते हैं। जिस विषय–वस्तु की पूर्व में व्याख्या हुई, वह युगीन परिस्थितियों पर हुई होती है किंतु शोध के माध्यम से उसी विषय–वस्तु का वर्तमान के सन्दर्भ में उसकी नई व्याख्या हो सकती है। इससे उस विषय में नई जानकारियाँ जुटती जायेंगी उसमें अद्यतनता आती जायेगी।

किसी भी साहित्यकार की विचारधारा के निर्माण में उस समय की राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि का बहुत प्रभाव रहता है। गहमरी जी उपन्यासों को अपने समय का यथार्थ मानते है। यही चिंतन स्वरूप उनका साहित्य नितान्त काल्पनिक होने के बावजूद यथार्थ को विविधवर्णी रूप में अभिव्यक्त करता है। उनके कथाओं में तत्कालीन समाज में व्याप्त शासन–व्यवस्था, अपराध और अपराधियों की मन :

स्थितियाँ और उनके रहस्यमय संसार, परिवारिक–समाजिक जीवन के साथ – साथ न्याय व्यवस्था किस रूप में थी उसकी जानकारी प्राप्त होती है। इस दृष्टि से शोध का महत्व और विस्तृत एवं महत्वपूर्ण हो जाता है।

अध्ययन पद्धति

यह शोध कार्य मौलिक एवं सहायक ग्रंथों पर आधारित होगा। इस शोध के लिए पुस्तकावलोकन विधि की सहायता ली जाएगी। मेरा यह शोध कार्य मौलिक होगा। यहाँ शोध के व्यावहारिक पहलू पर भी विचार–विमर्श किया जाएगा।

शोध में प्रयुक्त प्रदत्त

इस शोध कार्य में प्रदत्त हेतु विभिन्न पुस्तकालयों से सहायता ली जाएगी और उन पुस्तकालय में उपलब्ध गहमरी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अध्ययन सामग्री एकत्र की जाएगी। इस शोध से संबंधित रचनाओं तथा शोध ग्रंथो आदि की भी सहायता ली जाएगी। इसके साथ ही साहित्य के अनुभवी शिक्षक से भी लाभ उठाने का प्रयास किया जाएगा। इस प्रकार विभिन्न स्रोतों से तथ्यों के संकलन एवं विश्लेषण के द्वारा शोध कार्य में सहायता ली जाएगी।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु आवश्यकता के अनुरूप विभिन्न शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। जिनमें आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय प्रविधियां प्रमुख है। प्राथमिक स्त्रोत का सर्वेक्षण और अध्ययन तटस्थता के साथ किया जाएगा जिससे प्रस्तावित शोध विषय का वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जा सके। आधार और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग करते हुए प्रमाणिकता का विशेष ध्यान रखा जाएगा।

शोध अवधि

समयावधि के भीतर शोधकार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया जाएगा।

पूर्व में किए गए शोध

प्रस्तुत शोध कार्य का विषय मौलिक और नवीन है। यद्यपि प्रेमचंद पूर्व युग के साहित्यकार पर अनेक शोध कार्य हो चुके है, लेकिन "गोपालराम गहमरी के कथा साहित्य एक अनुशीलन "इस विषय पर जहाँ तक मेरी जानकारी में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। उनके कथा–साहित्य में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक परिवेश ज्ञान होता है।पात्रों के

आपसी संवाद से तत्कालीन व्याप्त समस्याओं को हम देख सकते है। अतः उपयुक्त शोध महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। इसलिए यह शोध कार्य पूर्णतः जिज्ञासा मूलक है।

शोध परिकल्पना

- गहमरी जी के समकालीन रचनाकारों का अध्ययन करना शोधार्थी का अभिष्ट होगा।
- कथा– साहित्य का औपनिवेशिक सत्ता और भारतीय नवजागरण के संदर्भ में अध्ययन किया जाएगा।
- कथा– साहित्य में समकालीन यथार्थ के स्वरूपों का अध्ययन किया जाएगा।
- आधुनिक अपराधशास्त्र और अपराध मनोविज्ञान के विकास में जासूसी कथा लेखन के योगदान का अध्ययन किया जाएगा।
- संस्मरणों के माध्यम से हिन्दी साहित्य के आरंभिक वर्षो के इतिहास व भाषायी चिंतन का अध्ययन किया जाएगा।

शोध–प्रश्न

1. गहमरी जी की रचनाओं में नवजागरणकालीन विचारों की अभिव्यक्त किन रूपों में देखने को मिलती है?

2. गहमरी जी के रचनाओं में यथार्थवाद की अभिव्यक्त किन रूपों में रही है?

3. जासूसी रचनाओं की लोकप्रियता का समाजिक और मनोवैज्ञानिक आधार क्या रही हैं जिसने पाठक वर्ग को प्रभावित किया?

4. औपनिवेशिक दौर में जहाँ सत्ता के खिलाफ बोलना कठिन कार्य था ऐसी परिस्थितियों में इन्हें जासूसी लेखन की आवश्यकता क्यों पड़ी?

5. तात्कालीन यूरोपियन जासूसी साहित्य, हिंदी जासूसी साहित्य से किन अर्थो में भिन्न है?

शोध विषय की रूपरेखा

संभावित अध्यायीकरण

भूमिका-

1.1 प्रतिपादन प्रणाली

1.2 प्रस्तुत विषय का औचित्य

1.3 आभार

प्रथम अध्याय- गोपालराम गहमरी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 गहमरी का जीवन वृत

1.2 गहमरी का रचना संसार

द्वितीय अध्याय- समकालीन कथाकारों में गोपालराम गहमरी का स्थान

2.1 किशोरीलाल गोस्वामी

2.2 देवकीनन्दन खत्री

2.3 श्री रामलाल वर्मा

2.4 जयरामदास गुप्ता

2.5 रामप्रसाद लाल

तृतीय अध्याय- गोपालराम गहमरी के कथा साहित्य में संरचना और सौंदर्य

3.1 गहमरी की रचना दृष्टि

3.2 गोपालराम गहमरी के कथा साहित्य में जासूसी परम्परा का विकास

3.3 गहमरी के कथा-साहित्य में वस्तु विन्यास

3.4 गहमरी के कथा-साहित्य में पात्र परिकल्पना

3.5 गहमरी के कथा-साहित्य में समस्या एवं समाधान

चतुर्थ अध्याय- गहमरी के कथा साहित्य में विविध स्वरूप

4.1 तात्कालिक समाजिक यथार्थ

4.2 तात्कालिक साहित्यिक यथार्थ

4.3 तात्कालिक राजनीतिक यथार्थ

4.4 तात्कालिक आर्थिक परिदृश्य

पंचम अध्याय- गहमरी के कथा साहित्य की भाषा-शैली

5.1 भाषा की परिभाषा एवं उत्पत्ति

5.2 ध्वनि संरचना

5.3 शब्द संरचना

5.4 पद संरचना

5.5 अर्थ संरचना

5.6 वाक्य संरचना

5.7 शिल्प संरचना

उपसंहार

(नोट आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप की रूपरेखा में बदलाव किया जा सकता है।)

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ सूची

1. गहमरी, गोपालराम, हंसराज की डायरी, इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग।

2. कृष्ण, संजय, (संपादक), गोपालराम गहमरी के जासूसी कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019

3. कृष्ण, संजय, गोपालराम गहमरी साहित्य के निर्माता, साहित्य अकादमी 2017.

4. गहमरी, गोपालराम, खूनी का भेद, चन्द्रप्रभा यन्त्रालय में मुद्रित, काशी, जासूस मासिक पत्र (मई और जून सन् 1901 के अंक) से उधृत, पुस्तकाकार संस्करण–1910.

5. गहमरी, गोपालराम, गेरुआ बाबा, एस.एस. मेहता एंड ब्रदर्स, काशी, संस्करण–1959

6. गहमरी, गोपालराम, जासूस की डाली, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ, संस्करण–1927

7. गहमरी, गोपालराम, झंडा डाकू, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, संस्करण–अज्ञात

8. गहमरी, गोपालराम, ठनठन गोपाल, किताब महल, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण –1946

9. गहमरी, गोपालराम, डबल बीबी, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, खेतबाड़ी बंबई, संस्करण–1901

10. गहमरी, गोपालराम, हत्या और कृष्णा, मैनेजर जासूस कार्यालय, गहमर, गाजीपुर, संस्करण–अज्ञात

11. गहमरी, गोपालराम, पत्नी, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, संस्करण-अज्ञात

12. गहमरी, गोपालराम, बलिहारी बुद्धि, चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस, संस्करण–1911

13. गहमरी, गोपालराम, भोजपुर की ठगी, मैनेजर जासूस कार्यालय, गहमर, गाजीपुर, संस्करण–1912

14. गहमरी, गोपालराम, मायावी, काशी हितचिन्तक प्रेस, काशी, संस्करण–1901

15. गहमरी, गोपालराम, हंसराज की डायरी, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, संस्करण–अज्ञात

16. कृष्ण, संजय (संपादन), गोपालराम गहमरी की प्रसिद्ध जासूसी कहानियाँ, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण – 2017.

17. कृष्ण, संजय, (संपादन), गोपालराम गहमरी की जासूसी कहानियाँ, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण – 2019

18. गहमरी, गोपालराम काशी की गोलकधंधारी एवं अन्य जासूसी कहानियाँ, नमस्कार बुक्स हाउस।

19. जासूस पत्रिका (1900 से 1928)

<u>सहायक ग्रंथ सूची</u>

1. पाण्डेय, मैनेजर, साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2018, पृष्ठ–4

2. कृष्ण, संजय, गोपालराम गहमरी साहित्य के निर्माता, साहित्य अकादमी 2017

3. राय गोपाल, हिन्दी उपन्यास का इतिहास राजकमल प्रकाशन संस्करण 2005, पृष्ठ–98

4. जैन, ज्ञानचंद, प्रेमचंद–पूर्व के हिंदी उपन्यास, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, प्रथम संस्करण 11998, पुष्ट–170, वही पृष्ठ–163

5. कृष्ण, संजय, गोपालराम गहमरी (विनिबंध), साहित्य अकादेमी, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृष्ठ–22–23

<u>पत्र–पत्रिका</u>

1. कथाक्रम पत्रिका, अप्रैल–जून 2023, वर्ष 25, अंक–96
2. ककसाड़ पत्रिका, नवम्बर 2018, वर्ष 4, अंक– 38
3. लमही पत्रिका, अप्रैल–जून 2014, वर्ष 4, अंक– 4
4. आजकल पत्रिका, मई 2023, वर्ष 79, अंक